१०७ कि,

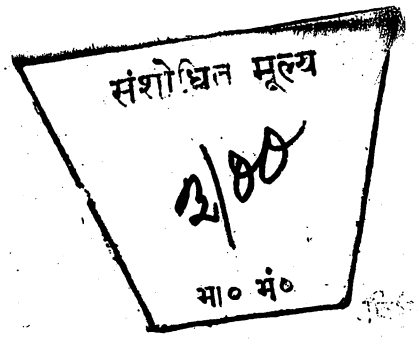

संशोधित मूल्य
2/40
भा० भं०

ग्रन्थ-संख्या	१९७
सोलहवाँ संस्करण	सं० २०२३ वि०
मूल्य	दो रु० पचास पैसे
प्रकाशक तथा विक्रेता	भारती भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद
मुद्रक	बी० आर० मेहता लीडर प्रेस, इलाहाबाद

नीरजा

महादेवी

पुलक पुलक उर, सिहर सिहर तन,
आज नयन आते क्यों भर-भर ?

सकुच सलज खिलती शेफाली,
अलस मौलश्री डाली डाली;
बुनते नव प्रवाल कुंजों में,
रजत श्याम तारों से जाली;

शिथिल मधु-पवन गिन-गिन मधु-कण,
हरसिंगार झरते हैं झर झर !
आज नयन आते क्यों भर भर ?

पिक की मधुमय वंशी बोली,
नाच उठी सुन अलिनी भोली;
अरुण सजल पाटल बरसाता,
तम पर मृदु पराग की रोली;

मृदुल अंक धर, दर्पण सा सर,
आँज रही निशि दृग-इन्दीवर !
आज नयन आते क्यों भर भर ?

आँसू बन बन तारक आते,
सुमन हृदय में सेज बिछाते;
कम्पित वानीरों के बन भी,
रह रह करुण विहाग सुनाते,

निद्रा उन्मन, कर कर विचरण,
लौट रही सपने संचित कर !
आज नयन आते क्यों भर भर ?

जीवन-जल-कण से निर्मित सा,
चाह-इन्द्रधनु से चित्रित सा;
सजल मेघ सा धूमिल है जग,
चिर नूतन सकरुण पुलकित सा;

तुम विद्युत् बन, आओ पाहुन !
मेरी पलकों में पग धर धर !
आज नयन आते क्यों भर भर ?